मीठी बोली

पाठ-परिचय

प्रस्तुत **कविता** में कवि ने मीठी बोली के प्रभाव का वर्णन किया है। कवि कहता है कि मनुष्य के पास वाणी ही एक ऐसा साधन है जिसके द्‌वारा वह चाहे तो किसी को अपना शत्रु बना ले, चाहे तो मित्र बना ले। मीठी बोली के कारण मनुष्य सबका प्रिय बन जाता है और वह सबकी सहानुभूति प्राप्त कर लेता है।

बस में जिससे हो जाते हैं प्राणी सारे
जन जिससे बन जाते हैं आँखों के तारे।
पत्थर को पिघलाकर मोम बनाने वाली
मुख खोलो तो मीठी बोली बोलो प्यारे।।

रगड़ों-झगड़ों का कड़वापन खोने वाली
जी में लगी हुई काई को धोने वाली।
सदा जोड़ देने वाली जो टूटा नाता
मीठी बोली बीज प्यार के है बोने वाली।।

काँटों में भी सुंदर फूल खिलाने वाली
रखने वाली कितने ही मुखड़ों की लाली।
निपट बना देने वाली है बिगड़ी बातें
होती मीठी बोली की करतूत निराली।।

जी उमगाने वाली चाह बढ़ाने वाली
दिल के पेचीदे तालों की सच्ची ताली।
फैलाने वाली सुगंध सब ओर अनूठी
मीठी बोली है विकसित फूलों की डाली।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

जीवन-परिचय

अयोध्यासिंह उपाध्याय
'हरिऔध'
(1865-1947)

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म 15 अप्रैल, 1865 ई० में निजामाबाद, जिला आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० भोलासिंह उपाध्याय और इनकी माता का नाम श्रीमती रुक्मणी देवी था। पाँच वर्ष की अवस्था में फ़ारसी के माध्यम से इनकी शिक्षा प्रारंभ हुई। मिडिल पास करके ये क्वींस कालेज, बनारस में अंग्रेज़ी पढ़ने गए, परंतु अस्वस्थता के कारण इन्हें अध्ययन छोड़ना पड़ा। स्वाध्याय से इन्होंने हिंदी, संस्कृत, फ़ारसी और अंग्रेज़ी में अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। निजामाबाद के मिडिल स्कूल के अध्यापक, कानूनगो और काशी विश्वविद्यालय में अवैतनिक शिक्षक के पदों पर इन्होंने कार्य किया। 6 मार्च, 1947 ई० में इनका देहावसान हो गया।

इनकी प्रमख काव्य-रचनाएँ 'प्रियप्रवास', 'वैदेही वनवास', 'पारिजात', 'रसकलश', 'अधखिला फूल', 'ठेठ हिंदी का ठाठ' (उपन्यास), 'रुक्मिणी परिणय' (नाटक) आदि मौलिक गद्य रचनाओं के अतिरिक्त आलोचनात्मक अनूदित रचनाएँ हैं।

प्रकृति के विविध रूपों और प्रकारों का सजीव चित्रण 'हरिऔध जी' की अन्यान्य विशेषताओं में से एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। आप मूलतः करुण और वात्सल्य रस के कवि थे। ये 'कवि सम्राट', 'साहित्य वाचस्पति' आदि उपाधियों से सम्मानित हुए।

शब्द-संपदा

प्राणी = जीव-जंतु। **आँखों के तारे** = बहुत अधिक प्रिय। **रगड़ों-झगड़ों** = लड़ाई-झगड़े, आपसी कलह। **काई** = पानी में पैदा होने वाली एक घास जो पानी को गंदा करती है। **जी** = मन। **निपट** = एकदम, पूरी तरह। **करतूत** = काम। **उमगाने वाली** = उमंगें पैदा करने वाली। **विकसित** = खिला हुआ।

अभ्यास प्रश्न

कविता से .....

1. दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए :

क. 'आँखों का तारा' का क्या अर्थ है?

(i) आँख की पुतली। ☐ (ii) आँख से दिखाई देने वाला तारा। ☐

(iii) बहुत अधिक प्यारा। ☐ (iv) अत्यधिक प्रिय। ☐

ख. 'पत्थर को पिघलाकर मोम बनाने वाली' का क्या अर्थ है?

(i) कठोर हृदय में भी दया पैदा कर देने वाली। ☐ (ii) पत्थर को मोम में बदल देने वाली। ☐

(iii) पत्थर को मोम की तरह पिघला देने वाली। ☐ (iv) इनमें से कोई नहीं। ☐

ग. 'काँटों में भी सुंदर फूल खिलाने वाली' का क्या अर्थ है?

(i) पत्थर को मोम में बदल देने वाली। ☐

(ii) काँटों द्वारा फूलों को नष्ट होने से बचाने वाली। ☐

(iii) कठोर स्वभाव के मनुष्य से भी दयापूर्ण व्यवहार करा देने वाली। ☐

(iv) कठोर हृदय में भी दया भाव भर देने वाली। ☐

2. दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

क. मीठी बोली के सभी गुणों का वर्णन कीजिए।

ख. सभी प्राणी किसके द्‌वारा वश में हो जाते हैं?

ग. इस कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

3. दी गई पंक्तियों का भाव अपने शब्दों में लिखिए :

क. जी में लगी हुई काई को धोने वाली।

ख. निपट बना देने वाली है बिगड़ी बातें।

ग. फैलाने वाली सुगंध सब ओर अनूठी।

4. ससंदर्भ एवं प्रसंग सहित भावार्थ लिखिए :

काँटों में भी सुंदर फूल खिलाने वाली
रखने वाली कितने ही मुखड़ों की लाली।
निपट बना देने वाली है बिगड़ी बातें
होती मीठी बोली की करतूत निराली।।

भाषा से.....

1. वचन बदलकर लिखिए :

आँख	_____	बोली	_____	मुखड़ों	_____	ताली	_____
झगड़ों	_____	तारा	_____	पत्थरों	_____	काँटा	_____

2. तुकांत शब्द लिखिए :

सारे	_____	खोलो	_____	खोने वाली	_____	वाली	_____
ताली	_____	लाली	_____	फूल	_____	चाह	_____

3. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

आँख	_____	_____	_____	पत्थर	_____	_____	_____
काँटा	_____	_____	_____	चाह	_____	_____	_____
फूल	_____	_____	_____	कोयल	_____	_____	_____

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. कविता को कंठस्थ कर कक्षा में सुनाइए।
2. क्या आपका कोई मित्र मीठा बोलता है? यदि हाँ, तो उसके व्यवहार का उसके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ? दस वाक्य लिखिए।
3. मीठी बोली के गुणों की सूची बनाकर कक्षा में लगाइए और आते-जाते उसे पढ़िए।